पाठ-4

अभिनन्दनीय भारत

- संकलित

आइए सीखें

■ कविता का हाव-भाव व लय के साथ वाचन ■ देशप्रेम, त्याग, बलिदान, निडरता आदि गुण ■ स्वतंत्रता का महत्व ■ पर्यायवाची शब्द ■ संज्ञा शब्द ■ उपसर्ग।

हे जन्म-भूमि भारत, हे कर्मभूमि भारत,
हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत,
जीवन सुमन चढ़ाकर, आराधना करेंगे,
तेरी जनम-जनम भर, हम वन्दना करेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

महिमा महान् तू है, गौरव निधान तू है,
तू प्राण है, हमारी जननी समान तू है,
तेरे लिए जिएँगे, तेरे लिए मरेंगे,
तेरे लिए जनम भर, हम साधना करेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

जिसका मुकुट हिमालय, जग जगमगा रहा है,
सागर जिसे रतन की, अंजलि चढ़ा रहा है,
वह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे,
उस देश के बिना हम, जीवित नहीं रहेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

शिक्षण संकेत

▶ छात्रों से कविता का सस्वर शुद्ध उच्चारण एवं वाचन करवाएँ ▶ देशभक्तिपूर्ण अन्य कविताएँ भी कक्षा में प्रस्तुत करें ▶ राष्ट्रीयता के भावों को विकसित करने के लिए प्रेरक प्रसंग या महापुरुषों की जीवनियाँ भी सुनाएँ ▶ पर्यायवाची शब्दों और संज्ञा शब्दों को वाक्य द्वारा समझाएँ।

जो संस्कृति अभी तक, दुर्जेय-सी बनी है,
जिसका विशाल मन्दिर, आदर्श का धनी है,
उसकी विजय-ध्वजा ले, हम विश्व में चलेंगे,
संस्कृति सुरभि पवन बन, हर कुंज में बहेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

शाश्वत स्वतन्त्रता का जो दीप जल रहा है,
आलोक का पथिक जो अविराम चल रहा है,
विश्वास है कि पलभर, रुकने उसे न देंगे,
उस ज्योति की शिखा को, ज्योतित सदा रखेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

- अज्ञात

शब्दार्थ

जन्मभूमि=जहाँ हमारा जन्म हुआ। **कर्मभूमि**=जहाँ हम कर्म करते हुए जीवन जीते हैं। **वन्दनीय**=पूजनीय। **सुमन**=पुष्प। **आराधना**=पूजा, प्रार्थना। **जननी**=जन्म देने वाली, माता। **दुर्जेय**=जिसे जीतना कठिन हो। **सुरभि**=सुगंध। **शाश्वत**=अमर, सनातन। **आलोक**=प्रकाश। **शिखा**=प्रकाश की लौ। **अर्चना**=प्रार्थना।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - कर्मभूमि – शिखा
   - मुकुट – सुरभि
   - संस्कृति – हिमालय
   - ज्योति – भारत

   (ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   - जीवन ..... चढ़ाकर आराधना करेंगे। (सुमन/सुगंध)
   - तू प्राण है, हमारी..... समान तू है। (जननी/भगिनी)
   - वह देश है हमारा..... कर कहेंगे। (पुकार/ललकार)
   - आलोक का पथिक जो ..... चल रहा है। (अभिराम/अविराम)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) कर्मभूमि का अर्थ क्या है?

(ख) कवि जनम-जनम भर किसकी वन्दना करने की बात कहता है?

(ग) भारत का मुकुट किसे कहते हैं?

(घ) सागर की अंजलि में क्या है?

(ङ) स्वतंत्रता का दीपक किस तरह जल रहा है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) 'जन्मभूमि' और 'कर्मभूमि' से कवि का क्या आशय है?

(ख) कवि जन्मभूमि के लिए जीने-मरने की बात क्यों करता है?

(ग) देश की सीमाओं के संदर्भ में कवि ललकार कर क्या कहना चाहता है?

(घ) संस्कृति को दुर्जेय-सी क्यों कहा गया है?

(ङ) कविता का केन्द्रीय भाव तीन-से-पाँच वाक्यों में लिखिए।

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

संस्कृति, कुंज, शाश्वत, वन्दनीय, अर्चना

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

बिसाल, हीमालय, शास्वत, आविराम, अजंली

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

जन्मभूमि, स्वतन्त्रता, साधना, दीप, आलोक

ध्यान दीजिए

पढ़िए और समझिए—

अभिनन्दनीय, अविराम, आलोक, सुमन, विशाल, विजय, विश्वास

उपर्युक्त शब्दों में रेखांकित शब्द अभि, अ, आ, सु तथा वि शब्द मूल शब्दों क्रमशः नन्दनीय, विराम, लोक, मन, शाल, जय तथा श्वास के पहले जुड़कर मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।

जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं।

उदाहरणार्थ — दुः + गुण = दुर्गुण (बुरे गुण)
अव + गुण = अवगुण (बुरे गुण)
सद् + गुण = सद्गुण (अच्छे गुण)
स + गुण = सगुण (गुणों से युक्त)
निः + गुण = निर्गुण (बिना किसी गुण के)

7. **निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए—**
अनुकूल, पराजय, विक्रम, उपयोग, अपकार, अनुसार

8. **निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए—**
जनम, रतन, करम, धरम, प्रान, चरन, प्रवीन

9. **निम्नलिखित शब्दों में से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए—**
विशाल, मंदिर, मुकुट, ध्वजा, वन्दनीय, भारत, हिमालय, स्वतंत्रता, सागर, अंजलि

10. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

अब करने की बारी

- इसी प्रकार की अन्य कविता खोजकर पढ़िए।
- देशभक्तिपूर्ण रचनाओं का संग्रह कीजिए।
- मध्यप्रदेश के शहीदों के नाम संकलित कीजिए तथा उनके जीवन से प्रेरणा लीजिए।
- भारत की विभिन्न भाषाओं के कवियों ने अपने-अपने ढंग से भारत-भूमि की वंदना की है। बंगला के रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिम बाबू, तमिल के सुब्रह्मण्यम भारती और उर्दू के अल्लामा इक़बाल ने भारत की वंदना में अनेक अमर गीत लिखे हैं।
अल्लाम इकबाल की यह पंक्ति कि 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' पठित कविता में आई पंक्ति 'जो संस्कृति अभी तक दुर्जेय सी बनी है' से बहुत अधिक भाव-साम्यता रखती है। जिसमें हमारी संस्कृति के अक्षुण्ण होने की बात है। भाव साम्यता के लिए अल्लामा इकबाल का गीत यहाँ दिया जा रहा है। अपने शिक्षक की सहायता से मालूम कीजिए कि इस गीत और पाठ की कविता में कौन-कौन सी समानताएँ हैं।

सारे जहां से अच्छा

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा,
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्तां हमारा।
गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में,
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा!

परवत वो सबसे ऊंचा, हमसाया आसमां का,
वह सन्तरी हमारा, वह पासबां हमारा!
गोदी में खेलती हैं, जिसकी हजारों नदियां,
गुलशन हैं जिनके दम से रश्केजिनां हमारा!

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा!
यूनान, मिस्त्रो, रूमा सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाक़ी नामोनिशां हमारा!

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मा हमारा!
'इक़बाल' कोई महरम अपना नहीं जहां में,
मालूम क्या किसी को दर्देनिहां हमारा!

- अल्लामा इकबाल

इस गीत के भावों को अच्छी तरह से समझने के लिए कुछ कठिन शब्दों के अर्थ दिए जा रहे हैं — **गुलिस्तां**=बगीचा, उपवन। **गुरबत**=विदेश, परदेश। **पासबां**=रक्षक। **रश्के जिनां**=स्वर्ग भी जिससे ईर्ष्या करे इतना सुन्दर। **दौरे ज़मा**=समय का चक्र। **महरम**=अन्तर्मन की बातें जानने वाला। **दर्देनिहां**=आन्तरिक कष्ट।

❑❑